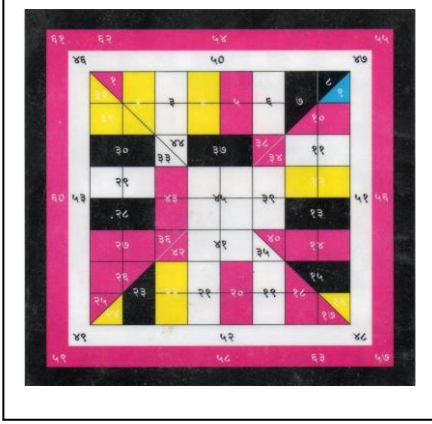


॥ गृह शिख्यादि वास्तु मण्डल देवतानां आवाहनम् होमः ॥



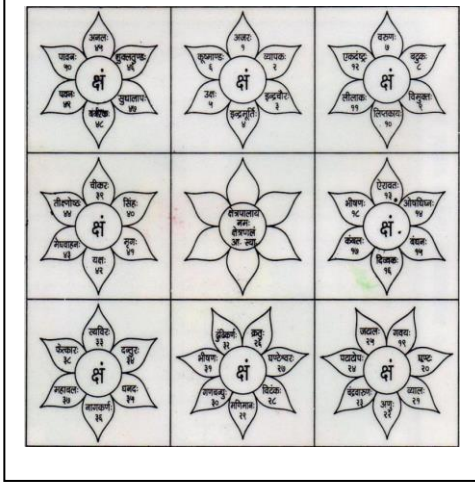
ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीहि अस्मान् स्वावेशो अनमीवो भवा नः।
यत्त्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥

नमस्ते वास्तु पुरुषाय भूशय्या भिरत प्रभो ।
मद्गृहं धन धान्यादि समृद्धं कुरु सर्वदा ॥

प्रत्येक नाम के आदि में 'ॐ' तथा अन्त में स्वाहा लगाकर हवन करें –

- | | | |
|--------------------|---------------------|----------------------|
| 1. ॐ शिख्यै नमः, | 23. शेषाय नमः | 45. ब्रह्मणे नमः |
| 2. पर्जन्यै नमः | 24. पापाय नमः | 46. चरक्यै नमः |
| 3. जयंताय नमः | 25. रोगाय नमः | 47. विदार्यै नमः |
| 4. इंद्राय नमः | 26. नागाय नमः | 48. पूतनायै नमः |
| 5. सूर्याय नमः | 27. मुख्याय नमः | 49. पापराक्षस्यै नमः |
| 6. सत्याय नमः | 28. भल्लाटाय नमः | 50. स्कंदाय नमः |
| 7. भृशाय नमः | 29. सोमाय नमः | 51. अर्यम्णं नमः |
| 8. अन्तरिक्षाय नमः | 30. उरगाय नमः | 52. जृम्भकाय नमः |
| 9. वायवे नमः | 31. अदितये नमः | 53. पिलिपिच्छाय नमः |
| 10. पूष्णे नमः | 32. दितये नमः | 54. इंद्राय नमः |
| 11. वितथाय नमः | 33. अद्भ्यो नमः | 55. अग्नये नमः |
| 12. गृहक्षताय नमः | 34. आपवत्साय नमः | 56. यमाय नमः |
| 13. यमाय नमः | 35. अर्यम्णे नमः | 57. निर्ऋतये नमः |
| 14. गन्धर्वाय नमः | 36. सावित्राय नमः | 58. वरुणाय नमः |
| 15. भृंगराजाय नमः | 37. सवित्रे नमः | 59. वायवे नमः |
| 16. मृगाय नमः | 38. विवस्वते नमः | 60. कुबेराय नमः |
| 17. पितृभ्यो नमः | 39. बिबुधाधिपाय नमः | 61. शंकराय नमः |
| 18. दौवारिकाय नमः | 40. जयन्ताय नमः | 62. ईशानाय नमः |
| 19. सुग्रीवाय नमः | 41. मित्राय नमः | 63. ब्रह्मणे नमः |
| 20. पुष्पदंताय नमः | 42. राजयक्ष्मणे नमः | 64. अनंताय नमः |
| 21. वरुणाय नमः | 43. रुद्राय नमः | |
| 22. असुराय नमः | 44. पृथ्वीधराय नमः | |

॥ क्षेत्रपाल मण्डल देवतानां आवाहनम् होमः ॥



ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च प्रथिवी मनु ।
ये अंतरिक्षे ये दिवि तेभ्यो : सर्पेभ्यो नमः ॥

यं यं यं यक्ष रूपं दशदिशिवदनं भूमिकम्पायमानं
सं सं सं संहारमूर्ती शुभ मुकुट जटाशेखरम् चन्द्रबिम्बम् ॥

दं दं दं दीर्घकायं विकृतनख मुखं चौर्ध्वरोयं करालं
पं पं पं पापनाशं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥

प्रत्येक नाम के आदि में 'ॐ' तथा अन्त में स्वाहा लगाकर हवन करें –

- | | | |
|-----------------------|-----------------------|-----------------------|
| 1. ॐ क्षेत्रपालाय नमः | 20. गवयाय नमः | 39. फेत्काराय नमः |
| 2. अजराय नमः | 21. घण्टाय नमः | 40. चीकराय नमः |
| 3. व्यापकाय नमः | 22. व्यालाय नमः | 41. सिंहाय नमः |
| 4. इन्द्रचौराय नमः | 23. अणवे नमः | 42. मृगाय नमः |
| 5. इन्द्रमूर्तये नमः | 24. चन्द्रवारुणाय नमः | 43. यक्षाय नमः |
| 6. उक्षाय नमः | 25. पटाटोपाय नमः | 44. मेघवाहनाय नमः |
| 7. कूष्माण्डाय नमः | 26. जटालाय नमः | 45. तीक्ष्णोष्ठाय नमः |
| 8. वरुणाय नमः | 27. क्रतवे नमः | 46. अनलाय नमः |
| 9. बटुकाय नमः | 28. घण्टेश्वराय नमः | 47. शुक्लतुण्डाय नमः |
| 10. विमुक्ताय नमः | 29. विटंकाय नमः | 48. सुधालापाय नमः |
| 11. लिप्तकायाय नमः | 30. मणिमानाय नमः | 49. बर्बरकाय नमः |
| 12. लीलाकाय नमः | 31. गणबन्धवे नमः | 50. पवनाय नमः |
| 13. एकदंष्ट्राय नमः | 32. डामराय नमः | 51. पावनाय नमः |
| 14. ऐरावताय नमः | 33. दुण्डिकर्णाय नमः | |
| 15. ओषधिघ्नाय नमः | 34. स्थविराय नमः | |
| 16. बन्धनाय नमः | 35. दन्तुराय नमः | |
| 17. दिव्यकाय नमः | 36. धनदाय नमः | |
| 18. कम्बलाय नमः | 37. नागकर्णाय नमः | |
| 19. भीषणाय नमः | 38. महाबलाय नमः | |

॥ श्री क्षेत्रपाल भैरवाष्टक स्तोत्र ॥

यं यं यं यक्ष-रूपं दश-दिशि-वदनं भूमि-कम्पाय-मानम् ।
सं सं सं संहार-मूर्ति शिर-मुकुट-जटा-जूट-चन्द्र-बिम्बम् ॥
दं दं दं दीर्घ-कायं विकृत-नख-मुखं ऊर्ध्व-रोम-करालं ।
पं पं पं पाप-नाशं प्रणमत-सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥१॥

शं शं शं शङ्ख-हस्तं शशि-कर-धवलं यक्ष-सम्पूर्ण-तेजं ।
मं मं मं माय-मायं कुलमकुल-कुलं मन्त्र-मूर्ति स्व-तत्त्वं ॥
भं भं भं भूत-नाथं किल-किलित-वचश्चारु-जिह्वालुलं ।
अं अं अं अंतरिक्षं प्रणमत-सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥५॥

रं रं रं रक्त-वर्णं कट-कटि-तनुं तीक्ष्ण-दंष्ट्रा-करालम् ।
घं घं घं घोष-घोषं घघ-घघ-घटितं घर्घरा-घोर-नादं ॥
कं कं कं काल-रूपं धिग-धिग-धृगितं ज्वालित-काम-देहं ।
दं दं दं दिव्य-देहं प्रणमत-सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥२॥

खं खं खं खड्ग-भेदं विषममृत-मयं काल-कालांधकारं ।
क्षीं क्षीं क्षीं क्षिप्र-वेगं दह दह दहनं गर्वितं भूमि-कम्पं ॥
शं शं शं शान्त-रूपं सकल-शुभ-करं देल-गन्धर्व-रूपं ।
बं बं बं बाल-लीलां प्रणमत-सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥६॥

लं लं लं लम्ब-दन्तं लल-लल-लुलितं दीर्घ-जिह्वा-करालं ।
धूं धूं धूं धूम्र-वर्णं स्फुट-विकृत-मुखं भासुरं भीम-रूपं ॥
रुं रुं रुं रुण्ड-मालं रुधिर-मय-मुखं ताम्र-नेत्रं विशालं ।
नं नं नं नग्न-रूपं प्रणमत-सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥३॥

सं सं सं सिद्धि-योगं सकल-गुण-मयं देव-देव-प्रसन्नम् ।
पं पं पं पद्म-नाभं हरि-हर-वरदं चन्द्र-सूर्याग्नि-नेत्रं ॥
जं जं जं यक्ष-नागं सतत भयहरं सर्वदेव स्वरूपं ।
रौं रौं रौं रौद्ररूपं प्रणमत-सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥७॥

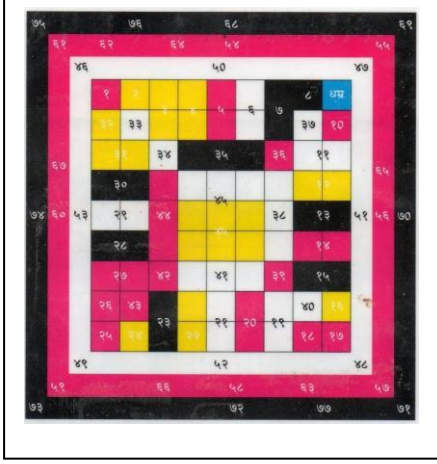
वं वं वं वायु-वेगं प्रलय-परिमितं ब्रह्म-रूपं-स्वरूपम् ।
खं खं खं खड्ग-हस्तं त्रिभुवननिलयं भास्करं भीमरूपं ॥
चं चं चं चालयन्तं चल-चल-चलितं चालितं भूत-चक्रं ।
मं मं मं माया-रूपं प्रणमत-सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥४॥

हं हं हं हस-घोषं हसित-कहकहा-राव-रुद्राट्टहासम् ।
यं यं यं यक्ष-सुप्तं शिर-कनक-महाबद्ध-खट्वाङ्गनाशं ॥
रं रं रं रङ्ग-रङ्ग-प्रहसित-वदनं पिङ्गकस्याश्मशानं ।
सं सं सं सिद्धि-नाथं प्रणमत-सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥८॥

॥फल-श्रुति॥

एवं यो भाव-युक्तं पठति च यतः भैरवास्याष्टकं हि ।
निर्विघ्नं दुःख-नाशं असुर-भय-हरं शाकिनीनां विनाशः ॥
दस्युर्न-व्याघ्र-सर्पः घृति विहसि सदा राजशस्त्रोस्तथाज्ञातं ।
सर्वे नश्यन्ति दूराद् ग्रह-गण-विषमाश्चेति तांश्चेष्टसिद्धिः ॥

॥ ८१ पद वास्तु मण्डल देवतानां आवाहनम् होमः ॥



ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीहि अस्मान् स्वावेशो अनमीवो भवा नः।
यत्त्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥

नमस्ते वास्तु पुरुषाय भूशय्या भिरत प्रभो ।
मद्रुहं धन धान्यादि समृद्धं कुरु सर्वदा ॥

प्रत्येक नाम के आदि में 'ॐ' तथा अन्त में स्वाहा लगाकर हवन करें –

- | | | | |
|---------------------|--------------------|----------------------|------------------------|
| 1. ॐ ब्रह्मणे नमः | 22. वायवे नमः | 43. सर्पाय नमः | 64. उग्रसेनाय नमः |
| 2. अर्यमणे नमः | 23. पूष्णे नमः | 44. अदितये नमः | 65. डामराय नमः |
| 3. विवस्वते नमः | 24. वितथाय नमः | 45. दितये नमः | 66. हेतुकाय नमः |
| 4. मित्राय नमः | 25. गृहक्षताय नमः | 46. चरक्यै नमः | 67. महाकालाय नमः |
| 5. पृथ्वीधराय नमः | 26. यमाय नमः | 47. विदार्यै नमः | 68. कालाप नमः |
| 6. जयाय नमः | 27. गन्धर्वाय नमः | 48. पूतनायै नमः | 69. पिलिपिच्छाय नमः |
| 7. सवित्रे नमः | 28. भृंगराजाय नमः | 49. पापराक्षस्यै नमः | 70. खेचराय नमः |
| 8. बिबुधाधिपाय नमः | 29. मृगाय नमः | 50. स्कंदाय नमः | 71. त्रिपारान्तकाय नमः |
| 9. जयाय नमः | 30. पितृभ्यो नमः | 51. अर्यमणे नमः | 72. अग्निवैतालाय नमः |
| 10. राजयक्ष्मणे नमः | 31. दौवारिकाय नमः | 52. जृम्भकाय नमः | 73. तलवासिने नमः |
| 11. रुद्राय नमः | 32. सुग्रीवाय नमः | 53. पिलिपिच्छाय नमः | 74. ध्रुवाय नमः |
| 12. अद्भ्यो नमः | 33. पुष्पदंताय नमः | 54. इन्द्राय नमः | 75. करालाय नमः |
| 13. आपवत्साय नमः | 34. वरुणाय नमः | 55. अग्नये नमः | 76. एकपदाय नमः |
| 14. शिखिने नमः | 35. असुराय नमः | 56. यमाय नमः | 77. भीमरुपाय नमः |
| 15. पर्जन्याय नमः | 36. शेषाय नमः | 57. निर्ऋतये नमः | 78. असिर्वैतालाय नमः |
| 16. जयंताय नमः | 37. पापाय नमः | 58. वरुणाय नमः | 79. शंकराय नमः |
| 17. कुलिशाय नमः | 38. रोगाय नमः | 59. वायवे नमः | 80. वास्तुपुरुषाय नमः |
| 18. सूर्याय नमः | 39. अहये नमः | 60. कुबेराय नमः | 81. अघोराय नमः |
| 19. सत्याय नमः | 40. मुख्याय नमः | 61. ईशानाय नमः | |
| 20. भृशाय नमः | 41. भल्लाटाय नमः | 62. ब्रह्मणे नमः | |
| 21. आकाशाय नमः | 42. सोमाय नमः | 63. अनंताय नमः | |

वास्तु पुरुष की कथा

वास्तु पुरुष की कल्पना भूखंड में एक ऐसे औंधे मुंह पड़े पुरुष के रूप में की जाती है, जिसमें उनका मुंह ईशान कोण व पैर नैऋत्य कोण की ओर होते हैं। उनकी भुजाएं व कंधे वायव्य कोण व अग्निकोण की ओर मुड़ी हुई रहती है।

मत्स्यपुराण के अनुसार वास्तु पुरुष की एक कथा है। देवताओं और असुरों का युद्ध हो रहा था। इस युद्ध में असुरों की ओर से अंधकासुर और देवताओं की ओर से भगवान शिव युद्ध कर रहे थे। युद्ध में दोनों के पसीने की कुछ बूंदें जब भूमि पर गिरी तो एक अत्यंत बलशाली और विराट पुरुष की उत्पत्ति हुई उस विराट पुरुष ने पूरी धरती को ढक लिया उस विराट पुरुष से देवता और असुर दोनों ही भयभीत हो गए। देवताओं को लगा कि यह असुरों की ओर से कोई पुरुष है।

जबकि असुरों को लगा कि यह देवताओं की तरफ से कोई नया देवता प्रकट हो गया है। इस विस्मय के कारण युद्ध थम गया और उसके बारे में जानने के लिए देवता और असुर दोनों ने उस विराट पुरुष को पकड़ कर ब्रह्मा जी के पास ले गए। उसे उनलोगों ने इस लिए पकड़ा की उसे खुद ज्ञान नहीं था कि वह कौन है क्यों कि वह अचानक उत्पन्न हुआ था उस विराट पुरुष ने उनके पकड़ने का विरोध भी नहीं किया फिर ब्रह्मलोक में ब्रह्मदेव के सामने पहुंचने पर उनलोगों ने ब्रह्मदेव से उस विराट पुरुष के बारे में बताने का आग्रह किया।

ब्रह्मा जी ने उस बृहदाकार पुरुष के बारे में कहा कि यह भगवान शिव और अंधकासुर के युद्ध के दौरान उनके शरीर से गिरे पसीने की बूंदों से इस विराट पुरुष का जन्म हुआ है इसलिए आप लोग इसे धरती पुत्र भी कह सकते हैं।

ब्रह्मदेव ने उस विराट पुरुष को संबोधित कर उसे अपने मानस पुत्र होने की संज्ञा दी और उसका नामकरण करते हुए कहा कि आज से तुम्हें संसार में वास्तु पुरुष के नाम से जाना जाएगा। और तुम्हें संसार के कल्याण के लिए धरती में समाहित होना पड़ेगा अर्थात् धरती के अंदर वास करना होगा मैं तुम्हें वरदान देता हूँ कि जो भी कोई व्यक्ति धरती के किसी भी भू-भाग पर कोई भी भवन, नगर, तालाब, मंदिर, आदि का निर्माण कार्य तुम को ध्यान में रखकर करेगा उसको देवता कार्य की सिद्धि, संवृद्धि और सफलता प्रदान करेंगे और जो कोई निर्माण कार्य में तुम्हारा ध्यान नहीं रखेगा और अपने मन कि करेगा उसे असुर तकलीफ और अड़चने देंगे। साथ ही जो भी निर्माण कार्य के समय पूजन जैसे- भूमिपूजन, देहलीपूजन, वास्तुपूजन के दौरान जो भी होम-हवन नैवेद्य तुम्हारे नाम से चढ़ाएगा वहीं तुम्हारा भोजन होगा।

ऐसा सुनकर वह वास्तुपुरुष धरती पे आया और ब्रह्मदेव के निर्देशानुसार एक विशेष मुद्रा में धरती पर बैठ गया जिससे उसकी पीठ नैऋत्य कोण व मुख ईशान्य कोण में था इसके उपरांत वह अपने दोनों हांथों को जोड़कर पिता ब्रह्मदेव व धरतीमाता (अदिति) को नमस्कार करते हुए औंधे मुंह धरती में सामने लगा उसको इस तरह धरती में समाने में विराट होने की वजह से हो रही मुश्किलों की वजह से देवताओं व असुरों ने उसके अंगों को जगह-जगह से पकड़कर उसे धरती में सामने में उसकी मदद की। अब जिस अंग को जिस देवता व असुर ने जहां से भी पकड़ रखा था आगे उसी अंग-पद में उसका वास अथवा स्वामित्व हुआ।

देवताओं ने वास्तु पुरुष से कहा तुम जैसे भूमि पर पड़े हुए हो वैसे ही सदा पड़े रहना और तीन माह में केवल एक बार ही दिशा बदलना।

उपर्युक्त तथ्यों को देखते हुए हमें किसी भी प्रकार का निर्माण कार्य वास्तु के अनुरूप ही करना चाहिए। अगर वास्तुपुरुष की इस औंधे मुंह लेटी हुई अवस्था के अनुसार भूखंड की लंबाई और चौड़ाई को 9 बराबर भागों में बांटा जाए तो इस भूखंड के 81 भाग बनते हैं जिन्हें वास्तुशास्त्र में पद कहा गया है जिस पद पर जो देवता वास करते हैं उन्हीं के अनुकूल उस पद का प्रयोग करने को कहा गया है। वास्तुशास्त्र में इसे ही 81 पद वाला वास्तु पुरुष मंडल कहा जाता है।

निवास के लिए गृह निर्माण में 81 पद वाले वास्तु पुरुष मंडल का ही विन्यास और पूजन किया जाता है। समरांगण सूत्रधार के अनुसार वास्तु पुरुष मंडल में कुल 45 देवता स्थित हैं। जिसमें मध्य के 9 पदों पर ब्रह्मदेव स्वयं स्थित हैं।

ब्रह्म पदों के चारों ओर 6-6 पदों पर ये मध्यस्थ देव हैं।

पूर्व में	अर्यमा (आदित्य देव),
दक्षिण में	विवस्वान (मृत्युदेव),
पश्चिम में	मित्र (हलधर) तथा
उत्तर में	पृथ्वीधर (भगवान अनंत शेषनाग) स्थित हैं।

ठीक इसी प्रकार मध्यस्त कोणों के भी देव हैं-

ईशान्य में	आप (हिमालय) और आपवत्स (भगवान शिव की अर्धांगिनी उमा)
आग्नेय में	सविता (गंगा) एवं सावित्र (वेदमाता गायत्री)
नैऋत्य में	जय (हरि इंद्र) तथा
वायव्य में	राजयक्ष्मा (भगवान कार्तिकेय) और रुद्र (भगवान महेश्वर) जो एक-एक पदों पर स्थित हैं।

फिर वास्तुपुरुष मंडल के बाहरी 32 पदों के देव हैं -

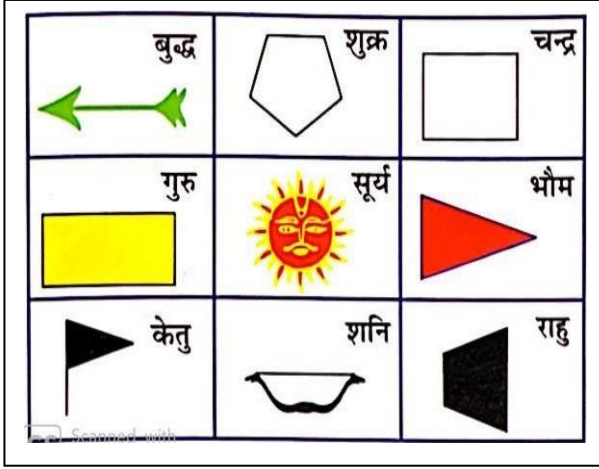
शिखी	भगवान शंकर
पर्जन्य	वर्षा के देव वृष्टिमान
जयंत	भगवान कश्यप
महेन्द्र	देवराज इंद्र
रवि	भगवान सूर्यदेव
सत्य	धर्मराज
भृश	कामदेव
आकाश	अंतरिक्ष-नभोदेव
अनिल	वायुदेव-मारुत
पूषा	मातृगण
वितथ	अधर्म
गृहत्क्षत	बुधदेव
यम	यमराज
गंधर्व	पुलम- गातु
भृंगराज व मृग	नैऋति देव

पित्र	पितृलोक के देव
दौवारिक	भगवान नंदी, द्वारपाल
सुग्रीव	प्रजापति मनु
पुष्पदंत	वायुदेव
वरुण	जलों-समुद्र के देव लोकपाल वरुण देव
असुर	सिंहिका पुत्र राहु
शोष	शनिश्चर
पापयक्ष्मा	क्षय
रोग	ज्वर
नाग	वाशुकी
मुख्य	भगवान विश्वकर्मा
भल्लाट	येति, चन्द्रदेव
सोम	भगवान कुबेर
भुजग	भगवान शेषनाग
अदिति	देवमाता, मतांतर से देवी लक्ष्मी
दिति	दैत्यमाता हैं

इनमें से 8 अंदर के एक-एक अतिरिक्त पदों के भी अधिष्ठाता हैं।

वास्तुपुरुष के प्रत्येक अंग-पद में स्थित देवता के अनुसार उनका सम्मान करते हुए उसी अनुरूप भवन का निर्माण, विन्यास एवं संयोजन करने की अनुमति शास्त्रों में दी गयी है। ऐसे निर्माण के फलस्वरूप वहां निवास करने वालों को सुख, सौभाग्य, आरोग्य, प्रगति व प्रसन्नता की प्राप्ति होती है।

॥ नवग्रह मण्डलम् ॥



ब्रह्मा मुरारी त्रिपुरान्तकारी
भानु शशि भूमि-सुतो बुधश्च ।
गुरुश्च शुक्र शनि राहु केतवः
सर्वे ग्रहा शांति करा भवन्तु ॥

सूर्य ग्रह

मण्डल के मध्य में गोलाकार

लाल लकड़ी - मदार फल - द्राक्ष

- बीज मंत्र - ॐ घृणिः सूर्याय नमः / ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः / ॐ सूर्याय नमः
- तांत्रिक मंत्र - ॐ हाँ ह्रीं ह्रीं सः सूर्याय नमः
- वैदिक मंत्र - ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च ।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥
- पुराणोक्त मंत्र - ॐ जपा कुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ।
तमोरिं सर्व पापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥
- अधिदेवता (दायें) - ईश्वरम् ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥
- प्रत्यधिदेवता (बायें) - अग्निम् ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुपहब्रुवे ।
देवाँ ऽआसादयादिह ।
(ईश्वर, अग्नि सहित सूर्याय नमः)
- जप संख्या - 7000 कलयुगे चतुर्थगुणो अर्थात् 28000 + दशांश हवन - 2800 +
दशांश तर्पण - 280 + दशांश मार्जन - 28 = 31108

चन्द्रमा ग्रह

मण्डल के अग्निकोण में अर्धचन्द्र सफेद लकड़ी - पलास फल - इक्षु

- बीज मंत्र - ॐ सों सोमाय नमः / ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः / ॐ चन्द्राय नमः
- तांत्रिक मंत्र - ॐ श्राँ श्रीं श्रौं सः चंद्राय नमः
- वैदिक मंत्र - ॐ इमं देवा असपत्न ऽ सुवद्ध्वं महते क्षत्राय महते
ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय ।
इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा
सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ऽ राजा ॥
- पुराणोक्त मंत्र - ॐ दधि शंख तुषाराभं क्षीरोदार्याव सम्भवम ।
नमामि शशिनं सोमं शंभोर्मुकुट भूषणं ॥
- अधिदेवता (दायें) - **उमाम्** ॐ श्रीश्रुते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि
रूपमश्विनौ व्यात्तम ईष्णन्नीषाण मुष्मीषाण सर्वलोकम्मीषाण ॥
- प्रत्यधिदेवता (बायें) - **आपः** ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्ता न ऽ ऊर्जे दधातन।
महेरणाय चक्षसे ।
(उमा, आपः सहित सोमाय नमः)
- जप संख्या - 11000 कलयुगे चतुर्थगुणो अर्थात् 44000 + दशांश हवन - 4400 +
दशांश तर्पण - 440 + दशांश मार्जन - 44 = 48884

मंगल ग्रह

मण्डल के दक्षिण में त्रिकोणाकार लाल लकड़ी - खैर फल - पूगीफल

- बीज मंत्र - ॐ अं अंगारकाय नमः / ॐ हूं श्रीं भौमाय नमः / ॐ भौमाय नमः
- तांत्रिक मंत्र - ॐ क्राँ क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः
- वैदिक मंत्र - ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् ।
अपा ऽ रेता ऽ सि जिन्वति ॥
- पुराणोक्त मंत्र - ॐ धरणी गर्भं संभूतं विद्युत्कान्ति समप्रभम् ।
कुमारं शक्ति हस्तञ्च मंगलं प्रणमाम्यहम् ॥
- अधिदेवता (दायें) - **स्कन्दम्** ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्तसमुद्रादुत वा पुरीषात् ।
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन् ॥
- प्रत्यधिदेवता (बायें) - **पृथिवीम्** ॐ स्योना पृथ्वी नो भवानृक्षरा निवेशनि ।
यच्छा नः शर्म सप्रथः ॥
(स्कन्द, पृथ्वी सहित भौमाय नमः)
- जप संख्या - 10000 कलयुगे चतुर्थगुणो अर्थात् 40000 + दशांश हवन - 4000 +
दशांश तर्पण - 400 + दशांश मार्जन - 40 = 44440

बुध ग्रह

मण्डल के ईशान कोण में तीर नुमा हरा लकड़ी - चिचड़ा फल - नारंगी

- बीज मंत्र - ॐ बुं बुधाय नमः / ॐ ऐं श्रीं श्रीं बुधाय नमः / ॐ बुधाय नमः
- तांत्रिक मंत्र - ॐ ब्राँ ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः
- वैदिक मंत्र - ॐ उद्धुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते स ऽ सृजेथा मयञ्च ।
अस्मिन्तसधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ॥
- पुराणोक्त मंत्र - ॐ प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणा प्रतिमं बुधम् ।
सौम्यं सौम्य गुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥
- अधिदेवता (दायें) - **विष्णुम्** ॐ विष्णो रराट मसि विष्णोः श्रण्त्रोस्थो विष्णोः
स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसी । वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ।
- प्रत्यधिदेवता (बायें) - **विष्णुम्** ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ।
समूढमस्य । पा ऽ सुरे स्वाहा ॥
(नारायण, विष्णु सहित बुधाय नमः)
- जप संख्या - 9000 कलयुगे चतुर्थगुणो अर्थात् 36000 + दशांश हवन - 3600 +
दशांश तर्पण - 360 + दशांश मार्जन - 36 = 17776

बृहस्पति ग्रह

मण्डल के उत्तर में अष्टदल पीला लकड़ी - पीपल फल - जंबीर

- बीज मंत्र - ॐ बृं बृहस्पतये नमः / ॐ ह्रीं क्लीं हूं बृहस्पतये नमः / ॐ गुरवे नमः
- तांत्रिक मंत्र - ॐ ग्राँ ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः
- वैदिक मंत्र - ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्युम द्विभाति क्रतुमज्जनेषु ।
यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ॥
- पुराणोक्त मंत्र - ॐ देवानां च ऋषीणां च गुरुं काचन सन्निभम् ।
बुद्धि भूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतम् ॥
- अधिदेवता (दायें) - **ब्रह्माणम्** ॐ आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे ।
राजन्यः शूरोऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री
धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः
सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे
निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः
पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥
- प्रत्यधिदेवता (बायें) - **इन्द्रम्** ॐ इन्द्र आसान्नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः ।
देवसेना नामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम् ॥
(ब्रह्मा, इन्द्र सहित बृहस्पतये नमः)
- जप संख्या - 19000 कलयुगे चतुर्थगुणो अर्थात् 76000 + दशांश हवन - 7600 +
दशांश तर्पण - 760 + दशांश मार्जन - 76 = 84436

शुक्र ग्रह

मण्डल के पूर्व में चतुष्कोण

सफेद लकड़ी - गुलर फल - बीजपूर

- बीज मंत्र - ॐ शुं शुक्राय नमः / ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः / ॐ शुक्राय नमः
- तांत्रिक मंत्र - ॐ द्राँ द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः
- वैदिक मंत्र - ॐ अन्नात्परिस्त्रुतो रसं ब्रम्हणा व्यपिवत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः ।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु ॥
- पुराणोक्त मंत्र - ॐ हिमकुन्द मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।
सर्वशास्त्र प्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ॥
- अधिदेवता (दायें) - **इन्द्रम्** ॐ सयोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्राहा शूर विद्वान् ।
जहिशत्रूं रप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि त्विश्वतो नः ॥
- प्रत्यधिदेवता (बायें) - **इन्द्राणीम्** ॐ अदित्यै रास्नासीन्द्राण्याऽ उष्णीषः ।
पूषासि धर्माय दीष्वः ॥
(इन्द्र, इन्द्राणी सहित शुक्राय नमः)
- जप संख्या - 16000 कलयुगे चतुर्थगुणो अर्थात् 64000 + दशांश हवन - 6400 +
दशांश तर्पण - 640 + दशांश मार्जन - 64 = 71104

शनि मंत्र

मण्डल के पश्चिम में धनुषाकार

काला लकड़ी - शमी फल - खजूर

- बीज मंत्र - ॐ शं शनैश्चराय नमः / ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः / ॐ शनये नमः
- तांत्रिक मंत्र - ॐ प्राँ प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः
- वैदिक मंत्र - ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये ।
शंयो रभिस्त्रवन्तु नः ॥
- पुराणोक्त मंत्र - ॐ नीलांजन समाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्तण्ड संभूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥
- अधिदेवता (दायें) - **यमम्** ॐ यमाय त्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा ।
स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्मः पित्रे ॥
- प्रत्यधिदेवता (बायें) - **प्रजापतिम्** ॐ प्रजापते न त्वदेता अन्यन्यो विश्वा रुपाणि परिता बभूव ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं ऽ स्याम पतयो रयीणाम् ॥
(यम, प्रजापति सहित शनिश्चराय नमः)
- जप संख्या - 23000 कलयुगे चतुर्थगुणो अर्थात् 92000 + दशांश हवन - 9200 +
दशांश तर्पण - 920 + दशांश मार्जन - 92 = 102212

राहु ग्रह

मण्डल के नैऋत्यकोण में मकराकृत काला लकड़ी - दूब (दूर्वा) फल - नारिकेल

- बीज मंत्र - ॐ रां राहवे नमः / ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः / ॐ राहवे नमः
- तांत्रिक मंत्र - ॐ भ्राँ भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः
- वैदिक मंत्र - ॐ कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा ।
कया शचिष्ठया वृता ॥
- पुराणोक्त मंत्र - ॐ अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् ।
सिंहिकागर्भं संभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ॥
- अधिदेवता (दायें) - **कालम्** ॐ कार्ष्णिर्गसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या ऽउन्नयामि ।
समापो ऽअद्विगमत समोषधीभिरोषधी : ॥
- प्रत्यधिदेवता (बायें) - **पन्नगान (सर्प)** ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च प्रथिवी मनु ।
ये अंतरिक्षे ये दिवि तेभ्यो : सर्पेभ्यो नमः ॥
(काल, पन्नगान(सर्प) सहित राहुवे नमः)
- जप संख्या - 18000 कलयुगे चतुर्थगुणो अर्थात् 72000 + दशांश हवन - 7200 +
दशांश तर्पण - 720 + दशांश मार्जन - 72 = 79992

केतु मंत्र

मण्डल के वायव्यकोण में पतका काला लकड़ी - कुशा (दर्भ) फल - दाडिम

- बीज मंत्र - ॐ कं केतवे नमः / ॐ ह्रीं ऐं केतवे नमः / ॐ केतवे नमः
- तांत्रिक मंत्र - ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः
- वैदिक मंत्र - ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे ।
समुषद्भिरजायथाः ॥
- पुराणोक्त मंत्र - ॐ पलाश पुष्प संकाशं तारका ग्रह मस्तकम् ।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ॥
- अधिदेवता (दायें) - **चित्रगुप्तम्** चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय ।
- प्रत्यधिदेवता(बायें) - **ब्रह्मणम्** ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः ।
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥
(चित्रगुप्त, ब्रह्मा सहित केतुवे नमः)
- जप संख्या - 17000 कलयुगे चतुर्थगुणो अर्थात् 68000 + दशांश हवन - 6800 +
दशांश तर्पण - 680 + दशांश मार्जन - 68 = 75548

पञ्चलोकपाल देवता

1. गणपतिम् (राहु के उत्तर) - ॐ गणानान्त्वा गणपति ॐ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ॐ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ॐ हवामहे व्वसो मम ।
आहमजानि गर्भधमात्त्वमजासि गर्भधं ॥
2. दुर्गाम् (शनि के उत्तर) - ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमा नयति कश्चन ।
सस्त्यश्चकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम् ॥
3. वायुम् (सूर्य के उत्तर) - ॐ आ नो नियुद्धिः शतिनीभिरध्वर ॐ सहश्रिणीभिरुपयाहि
यज्ञम्, वायो अस्मिन्सवने मादयस्व यूयम्पात स्वस्तिभिः सदा नः
4. आकाशम् (राहु के दक्षिण) - ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य
हविरसि स्वाहा । दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्धिशो दिग्भ्यः स्वाहा
5. अश्विनौ (केतु के दक्षिण) - ॐ यावांकशा मधुमत्यश्चिना सूनृतावती ।
तयां यज्ञं मिमिक्षतम् ॥

वास्तोष्पतेः क्षेत्राधिपतेर् दशदिक्पाल पूजनम्

- वास्तोष्पतिम् (गुरु के उत्तर) - ॐ वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान् त्स्वावेशो अनमीवोः भवान् ।
यत् त्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शंनो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥
- क्षेत्राधिपतिम् (गुरु के उत्तर) - ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुर एतारमग्नेः ।
एमेनमवृधन्नमृता अमर्त्यं वैश्वानरं क्षेत्रजित्याय देवाः ॥
- 1. इन्द्रम् (मण्डल के पूर्व) - ॐ त्रातार-मिन्द्र मवितार-मिन्द्र ॐ हवे हवे सुहव ॐ शूर-मिन्द्रम् ।
ह्वयामि शक्रं पुरु-हूत मिन्द्र ॐ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥
- 2. अग्निम् (मण्डल के अग्निकोण) - ॐ त्वन्नोऽअग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य ।
त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेष ॐ रक्षमाणस्तवव्रते ॥
- 3. यमम् (मण्डल के दक्षिण) - ॐ यमाय त्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा ।
स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्माय पित्रे ॥
- 4. निर्ऋतिम् (मण्डल के नैऋत्यकोण) - ॐ असुन्नवन्तमयजमानमिच्छस्तेन- स्येत्यामन्विहितस्करस्य ।
अन्यमस्मदिच्छ मा तऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥
- 5. वरुणम् (मण्डल के पश्चिम) - ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ।
अहेणमानो वरुणेह बोध्युरुश ॐ समानऽआयुः प्रमोषीः ॥
- 6. वायुम् (मण्डल के वायव्यकोण) - ॐ आ नो नियुद्धिः शतिनीभिरध्व ॐ सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम् ।
वायोऽअस्मिन्सवने मादयस्व यूयम्पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥
- 7. सोमम् (मण्डल के उत्तर) - ॐ वय ॐ सोमव्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि ॥
- 8. ईशानम् (मण्डल के ऐशान्यकोण) - ॐ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयं ।
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्ध स्वस्तये ॥
- 9. ब्रह्माणम् (मण्डल के मध्य) - ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषः ।
यःश ॐ सते स्तुवते धायि पञ्चऽइन्द्र ज्येष्ठाऽअस्माँऽअवन्तु देवाः ॥
- 10. अनन्तम् (नैऋत्य पश्चिम के मध्य) - ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरानिवेशनी यच्छा नः सर्मसप्रथाः ॥

॥ षोडश मातृका मण्डलम् ॥

ॐ आत्मनःकुल- देवतायै नमः १७	ॐ लोकमातृभ्यो नमः १३	ॐ देवसायै नमः ९	ॐ मेघायै नमः ५
ॐ तुष्ट्यै नमः १६	ॐ मातृभ्यो नमः १२	ॐ जयायै नमः ८	ॐ शच्यै नमः १२
ॐ पुष्ट्यै नमः १५	ॐ स्वाहायै नमः ११	ॐ विजयायै नमः ७	ॐ पद्मायै नमः ३
ॐ धृत्यै नमः १४	ॐ स्वधायै नमः ११	ॐ सावित्र्यै नमः ७	ॐ गौर्व्यै नमः २ ॐ गणेशाय नमः १

गौरी पद्मा शची मेधा, सावित्री विजया जया ।
देवसेना स्वधा स्वाहा, मातरो लोकमातरः ॥
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिः, आत्मनः कुलदेवता ।
गणेशेनाधिका ह्येता, वृद्धौ पूज्याश्च षोडश ॥

● गणेशम्

ॐ गणानां त्वा गणपति ॐ हवामहे, प्रियाणां त्वा प्रियपति ॐ हवामहे, निधीनां
त्वा निधिपति ॐ हवामहे। वसोः मम आहमजानि गर्भधम् त्वमजासि गर्भधम्।
ॐ समिपेमातृवर्गस्य सर्वविघ्न हरंसदा ।
त्रैलोक्य पूजितं देवं गणेशं स्थापयाम्यहं ॥

(ॐ भुर्भुवः स्वः गणपतये नमः गणपतिम् आवाह्यामि स्थापयामि)

1. गौरीम्

ॐ आयं गौः पृथ्वीरक्रमीदसदन् मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्तस्वः ॥
हिमाद्रि तनयां देविं वरदां दिव्य शंकरप्रियाम् ।
लंबोदरस्य जननीं गौरिं आवाहयाम्यहम् ॥

(ॐ भुर्भुवः स्वः गौर्यै नमः गौरीम् आवाह्यामि स्थापयामि)

2. पद्माम्

ॐ हिरण्यरूपा उषयो विरोक उभाविन्द्रा उदिथः सूर्यश्च ।
आरोहतं वरुण मित्र गर्तं ततश्चक्ष्वाथामदितिं दितिञ्च मित्रोसिवरुणोसि ॥
सुवर्णाभापद्महस्तां विष्णोर्वक्षस्थल स्थितां ।
त्रैलोक्य पूजितां देविं पद्मां आवाहयाम्यहं ॥

(ॐ भुर्भुवः स्वः पद्मायै नमः पद्माम् आवाह्यामि स्थापयामि)

3. शचीम्

ॐ निवेशनः संगमनो वसूनां विश्वा रुपाभिचष्टे शचीभीः ।
देव इव सविता सत्यधर्मन्द्रो न तस्त्यौ समरे पथीनाम् ॥
दिव्यरूपां विशालाक्षीं शुचिं कुंडल धारिणीं ।
रक्तमुक्ताद्यलंकारां शचि मावाहयाम्यहं ॥

(ॐ भुर्भुवः स्वः शच्यै नमः शचीम् आवाह्यामि स्थापयामि)

4. मेधाम्

ॐ मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः ।

मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा ॥

ॐ विश्वेस्मिन् भूरिवरदां जरां निर्जरसेविताम् ।

बुद्धिप्रसादिनीं सौम्यां मेधामावाहयाम्यहं ॥

(ॐ भुर्भुवः स्वः मेधायै नमः मेधाम् आवाह्यामि स्थापयामि)

5. सावित्रीम्

ॐ सविता त्वा सवाना ऽ सुवतामग्निर्गृहपतीना ऽ सोमो वनस्पतीनाम् ।

बृहस्पतिर्वाच इन्द्रो ज्यैष्ठ्याय रुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्यो वरुणो धर्मपतीनाम् ॥

ॐ जगत्सृष्टिकरीं धात्रीं देवीं प्रणव मातृकाम् ।

वेदगर्भा यज्ञमयीं सावित्रीं स्थापयाम्यहम् ॥

(ॐ भुर्भुवः स्वः सावित्र्यै नमः सावित्रीम् आवाह्यामि स्थापयामि)

6. विजयाम्

ॐ विज्यन्धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ २ ऽउत ।

अनेशनस्य या ऽइषव ऽआभुरस्य निषङ्गाधिः ॥

ॐ सर्वास्त्रधारिणीं देवीं सर्वाभरण भूषिताम् ।

सर्वदेवस्तुतां वन्द्या विजयां स्थापयाम्यहम् ॥

(ॐ भुर्भुवः स्वः विजय्यै नमः विजयाम् आवाह्यामि स्थापयामि)

7. जयाम्

ॐ बह्वीनां पिता बहुरस्य पुत्रश्चिश्चा कृणोति समनावगत्य ।

इषुधिः सङ्काः पृतनाश्च सर्वाः पृष्ठे निनद्धो जयति प्रसूतः ॥

ॐ दैत्यरक्षःक्षय करीं देवानामभयप्रदां ।

गीर्वाण वंदिता देवीं जया मावाहयाम्यहं ॥

(ॐ भुर्भुवः स्वः जय्यै नमः जयाम् आवाह्यामि स्थापयामि)

8. देवसेनाम्

ॐ इन्द्र आसान्नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः ।

देवसेना नामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम् ॥

ॐ मयूर वाहनां देवीं खड्ग शक्ति धनुर्धराम् ।

आवाहयेद् देवसेनां तारकासुरमर्दिनीं ॥

(ॐ भुर्भुवः स्वः देवसेनायै नमः देवसेनाम् आवाह्यामि स्थापयामि)

9. स्वधाम्

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः, पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः,

प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः ।

अक्षन् पितरोऽमीमदन्त, पितरोतीतृपन्त पितरः, पितरः शुन्धध्वम् ॥

ॐ अग्रजा सर्वदेवानां कव्यार्थं प्रतिष्ठिता ।

पितृणां तृप्तिदां देवीं स्वधा मावाहयाम्यहं ॥

(ॐ भुर्भुवः स्वः स्वधायै नमः स्वधाम् आवाह्यामि स्थापयामि)

10. स्वाहाम्

ॐ स्वाहा प्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्यः। पृथिव्यै स्वाहाग्नये स्वाहान्तरिक्षाय
स्वाहा वायवे स्वाहा । दिवे स्वाहा सूर्याय स्वाहा ॥
ॐ हविर्गृहित्वा सततं देवेभ्यो या प्रयच्छति ।
तां दिव्यरूपां नरदां स्वाहा मावाहयाम्यहम् ॥

(ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहायै नमः स्वाहाम् आवाह्यामि स्थापयामि)

11. मातृ

ॐ आपो अस्मान् मातरः शुन्ध्यन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु ।
विश्व ऽ हि रिप्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाब्भ्यः शुचिरा पूतएमि । दीक्षातपसोस्तनूरसि
तां त्वा शिवा ऽ शग्मां परिदधे भद्रं वर्णम पुष्यन ॥
ॐ आवाहयाम्यहं मातः सकला लोक पूजिताः ।
सर्वकल्याण रूपिण्यो वरदा दिव्य भूषिताः ॥

(ॐ भूर्भुवः स्वः मातृभ्यो नमः मातृम् आवाह्यामि स्थापयामि)

12. लोकमातृ

ॐ रयिश्चमे रायश्चमे पुष्टिश्चमे विभुश्चमे प्रभुश्चमे पूर्णश्चमे पूर्णतरश्चमे
कुयवंचमे क्षितं चमे नंचमे क्षुच्चमे यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥
ॐ आवाहयेल्लोकमातृर्जयंतीप्रमुखाःशुभाः ।
नानाभीष्टप्रदाः शांता सर्वलोकहिता वहाः ॥

(ॐ भूर्भुवः स्वः लोकमातृभ्यो नमः लोकमातृम् आवाह्यामि स्थापयामि)

13. धृतिम्

ॐ यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु ।
यस्मान्न ऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥
ॐ नमःस्तुष्टिकरीं देवीं लोकानुग्रहकर्मणी ।
स्वकामस्यच सिध्यर्थं धृतिमावाहयाम्यहं ॥

(ॐ भूर्भुवः स्वः धृत्यै नमः धृतिम् आवाह्यामि स्थापयामि)

14. पुष्टिम्

ॐ त्वाष्टा तुरीयो अभ्युत इन्द्राग्नी पुष्टिवर्धना ।
द्विपदा धन्दा इन्द्रियमुक्षा गौर्न वयो दधुः ॥
ॐ आवाहयाम्यहं पुष्टि जगद्विघ्न विनाशिनी ।
ज्ञात्वा पुष्टि करिं देवीं रक्षणाया ध्वरे मम ॥

(ॐ भूर्भुवः स्वः पुष्ट्यै नमः पुष्टिम् आवाह्यामि स्थापयामि)

15. तुष्टिम्

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः ।
सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ॥
ॐ सौम्यरूपे सुवर्णाभे विद्युज्वलीतकुंडले ।
धर्मतुष्टिकरीं देवीं मस्मिन्यज्ञे हितायवै ॥

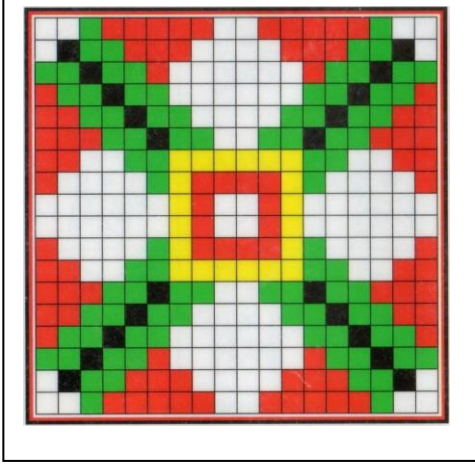
(ॐ भूर्भुवः स्वः तुष्ट्यै नमः तुष्टिम् आवाह्यामि स्थापयामि)

16. आत्मनः कुलदेवताम्

ॐ प्राणाय स्वाहा अपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा ।
चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा ॥
ॐ त्वमात्मासर्व देवानां देहिनामंत्र सर्वगां ।
वंशवृद्धि करीं देवीं कुलदेवीं प्रपूजयेत् ॥

(ॐ भूर्भुवः स्वः आत्मनः कुलदेवतायै नमः आत्मनः कुलदेवताम् आवाह्यामि स्थापयामि)

॥ सर्वतोभद्र मण्डल देवतानां आवाहनम् होमः ॥

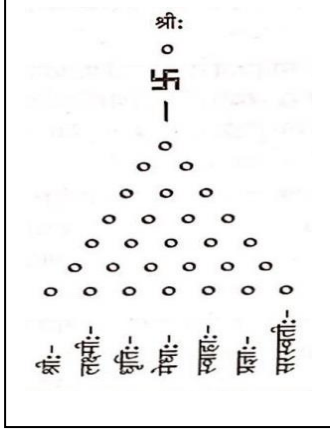


ॐ इमं रक्तवर्णन्तु तथाहस्त सुविस्तृतम् ।
इद्रध्वजं चालभामि महेन्द्राय सुप्रीतये ॥
अमुमिन्द्रध्वजं चित्रं सर्व विघ्न विनाशकम् ।
अस्मिन् मण्डप पार्श्वे तु स्थापयामि सुरार्चने ॥

प्रत्येक नाम के आदि में 'ॐ' तथा अन्त में स्वाहा लगाकर हवन करें –

- | | | |
|---------------------------|-----------------------------|-----------------------|
| 1. ॐ ब्रह्मणे नमः | 21. दक्षादि सप्तगणेभ्यो नमः | 41. गौतमाय नमः |
| 2. सोमाय नमः | 22. दुर्गायै नमः | 42. भरद्वाजाय नमः |
| 3. ईशानाय नमः | 23. विष्णवे नमः | 43. विश्वामित्राय नमः |
| 4. इन्द्राय नमः | 24. स्वधायै नमः | 44. कश्यपाय नमः |
| 5. अग्नये नमः | 25. मृत्यु रोगाभ्यां नमः | 45. जमदग्नये नमः |
| 6. यमाय नमः | 26. गणपतये नमः | 46. वसिष्ठाय नमः |
| 7. नैर्ऋतये नमः | 27. अद्भ्यो नमः | 47. अत्रये नमः |
| 8. वरुणाय नमः | 28. मरुदभ्यो नमः | 48. अरुन्धत्यै नमः |
| 9. वायवे नमः | 29. पृथिव्यै नमः | 49. ऐन्द्रै नमः |
| 10. अष्टवसुभ्यो नमः | 30. गंगादि नंदीभ्यो नमः | 50. कौमार्यै नमः |
| 11. एकादश रुद्रेभ्यो नमः | 31. सप्तसागरेभ्यो नमः | 51. ब्राह्म्यै नमः |
| 12. द्वादशादित्येभ्यो नमः | 32. मेरवे नमः | 52. वाराह्यै नमः |
| 13. अश्विभ्यां नमः | 33. गदायै नमः | 53. चामुण्डायै नमः |
| 14. सपैतृक-विश्वेदेव नमः | 34. त्रिशूलाय नमः | 54. वैष्णव्यै नमः |
| 15. सप्तयक्षेभ्यो नमः | 35. वज्राय नमः | 55. माहेश्वर्यै नमः |
| 16. भूतनागेभ्यो नमः | 36. शक्तये नमः | 56. वैनायक्यै नमः |
| 17. गन्धर्वाप्सरोभ्यो नमः | 37. दण्डाय नमः | |
| 18. स्कंदाय नमः | 38. खड्गाय नमः | |
| 19. नन्दीश्वराय नमः | 39. पाशाय नमः | |
| 20. शूलमहाकालाभ्यां नमः | 40. अंकुशाय नमः | |

॥ सप्तघृत मातृका (वसोर्धारा) मण्डलम् ॥



श्रीर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती ।
माण्डल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातरः ॥

1. श्रीयम्

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।

पशूनां ऽ रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा ॥

ॐ सुवर्णाभां पद्महस्तां विष्णोर्वक्षस्थल स्थितां ।

त्रैलोक्यवल्लभां देवी श्रियमावा हयाम्यहं ॥

(ॐ भूर्भुवः स्वः श्रियै नमः श्रियम् आवाह्यामि स्थापयामि)

2. लक्ष्मीम्

ॐ श्रीश्रुते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम ।

ईष्णान्निषाण मुं मङ्गलाण सर्वलोकम् मङ्गलाण ॥

ॐ शुभ लक्षण संपन्नां क्षीरसागर संभवां ।

चन्द्रस्यभगिनींसौम्यां लक्ष्मीमावाहयाम्यहं ॥

(ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीम् आवाह्यामि स्थापयामि)

3. धृतिम्

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः । भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।

स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवां ऽ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥

ॐ संसारधारणपरां धैर्य लक्षण संयुताम् ।

सर्वसिद्धि करीं देवीं धृति मावाहयाम्यहं ॥

(ॐ भूर्भुवः स्वः धृत्यै नमः धृतिम् आवाह्यामि स्थापयामि)

4. मेधाम्

ॐ मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः ।

मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा ॥

ॐ सदसत्कार्यकरणक्षमाबुद्धिविलासिनी ।

मम कार्ये शुभकरी मेधा मावाहयाम्यहं ॥

(ॐ भूर्भुवः स्वः मेधायै नमः मेधाम् आवाह्यामि स्थापयामि)

5. स्वाहाम्

ॐ प्राणाय स्वाहा अपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा ।

चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा ॥

ॐ सौम्यरुपांसुवर्णाभां विद्युज्वलित कुंडलाम् ।

जननीं पुष्टि करीणीं पुष्टिं मावा हयाम्यहं ॥

(ॐ भुर्भुवः स्वः स्वाहायै नमः स्वाहाम् आवाह्यामि स्थापयामि)

6. प्रज्ञाम्

ॐ आयं गौः पृथ्वीरक्रमीदसदन् मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्तस्वः ॥

ॐ भूतग्राम मिदंसर्व मजेन श्रद्धयाकृतम् ।

श्रद्धयाप्राप्यते सत्यं श्रद्धा मावाहयाम्यहं ॥

(ॐ भुर्भुवः स्वः प्रज्ञायै नमः प्रज्ञाम् आवाह्यामि स्थापयामि)

7. सरस्वतीम्

ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती । यज्ञं वष्टु धियावसुः ॥

ॐ प्रणवस्यैव जननीं रसना ग्रस्थिता सदा ।

प्रगल्भ दात्रि चपलां वाणीं मावाहयाम्यहं ॥

(ॐ भुर्भुवः स्वः सरस्वत्यै नमः सरस्वतीम् आवाह्यामि स्थापयामि)

॥ चतुःषष्टि योगिनी मण्डलम् ॥

विष्णुना	वराहना	गजना	सिंहना	अश्विना	शिवना
मृगलोचना	काली	वराहना	सिंहना	अश्विना	शिवना
दुर्गा	काली	वराहना	सिंहना	अश्विना	शिवना
काली	वराहना	गजना	सिंहना	अश्विना	शिवना
वराहना	काली	गजना	सिंहना	अश्विना	शिवना
काली	वराहना	गजना	सिंहना	अश्विना	शिवना
गजना	काली	वराहना	सिंहना	अश्विना	शिवना
सिंहना	काली	वराहना	गजना	अश्विना	शिवना
अश्विना	काली	वराहना	गजना	सिंहना	शिवना
शिवना	काली	वराहना	गजना	सिंहना	अश्विना
काली	वराहना	गजना	सिंहना	अश्विना	शिवना
वराहना	काली	गजना	सिंहना	अश्विना	शिवना
गजना	काली	वराहना	सिंहना	अश्विना	शिवना
सिंहना	काली	वराहना	गजना	अश्विना	शिवना
अश्विना	काली	वराहना	गजना	सिंहना	शिवना
शिवना	काली	वराहना	गजना	सिंहना	अश्विना

महाकाल्यै नमः

ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमा नयति कश्चन ।

ससस्त्यश्चकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम् ॥

महालक्ष्म्यै नमः

ॐ श्रीश्रुते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ
व्यात्तम् । ईष्णान्निषाण मुम्मीषाण सर्वलोकम्मीषाण ॥

महा सरस्वत्यै नमः

ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती ।

यज्ञं वष्टु धियावसुः॥

प्रत्येक नाम के आदि में 'ॐ' तथा अन्त में स्वाहा लगाकर हवन करें –

- ॐ गजाननायै नमः
- सिंह मुख्यै नमः
- गृध्रास्यै नमः
- काक-तुण्डिकायै नमः
- उष्ट्र गीवायै नमः
- हय-ग्रीवायै नमः
- वाराह्यै नमः
- शिरभाननायै नमः
- उलूकिकायै नमः
- शिवारावायै नमः
- मायूर्यै नमः
- विकटाननायै नमः
- अष्ट-वक्त्रायै नमः
- कोटराक्ष्यै नमः
- कुब्जायै नमः
- विकटलोचनायै नमः
- शुष्कोदर्यै नमः
- ललज्जिह्वायै नमः
- श्व-दंष्ट्रायै नमः
- वानराननायै नमः
- रुक्षाक्ष्यै नमः
- केकराक्ष्यै नमः
- बृहत्-तुण्डायै नमः
- सुरा-प्रियायै नमः
- कपाल-हस्तायै नमः
- रक्ताक्ष्यै नमः
- शुक्र्यै नमः
- श्येन्यै नमः
- कपोतिकायै नमः
- पाश-हस्तायै नमः
- दण्ड-हस्तायै नमः
- प्रचण्डायै नमः
- चण्ड-विक्रमायै नमः
- शिशुघ्न्यै नमः
- पाश-हन्त्र्यै नमः
- काल्यै नमः
- रुधिर-पायिन्यै नमः
- वसा-धयायै नमः
- गर्भ-भक्षायै नमः
- शव-हस्तायै नमः
- आन्त्र-मालिन्यै नमः
- स्थूल-केश्यै नमः
- बृहत्-कुक्ष्यै नमः
- सर्पास्यायै नमः
- प्रेत-वाहनायै नमः
- दन्द-शूक-करायै नमः
- क्रौञ्च्यै नमः
- मृग-शीर्षायै नमः
- वृषाननायै नमः
- व्यात्तास्यायै नमः
- धूमनिः श्वासायै नमः
- व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे नमः
- तापिन्यै नमः
- शोषणीदृष्ट्यै नमः
- कोटर्यै नमः
- स्थूल-नासिकायै नमः
- विद्युत्प्रभायै नमः
- बलाकास्यायै नमः
- मार्जार्यै नमः
- कट-पूतनायै नमः
- अट्टाट्टहासायै नमः
- कामाक्ष्यै नमः
- मृगाक्ष्यै नमः
- मृगलोचनायै नमः

॥ चतुष्षष्टि-योगिनी नाम-स्तोत्रम् ॥

गजास्या सिंह-वक्त्रा च, गृध्रास्या काक-तुण्डिका ।
 उष्ट्रा-स्याऽश्व-खर-ग्रीवा, वाराहास्या शिवानना ॥
 उलूकाक्षी घोर-रवा, मायूरी शरभानना ।
 कोटराक्षी चाष्ट-वक्त्रा, कुब्जा च विकटानना ॥
 शुष्कोदरी ललज्जिह्वा, श्व-दंष्ट्रा वानरानना ।
 ऋक्षाक्षी केकराक्षी च, बृहत्-तुण्डा सुराप्रिया ॥
 कपालहस्ता रक्ताक्षी च, शुकी श्येनी कपोतिका ।
 पाशहस्ता दंडहस्ता, प्रचण्डा चण्डविक्रमा ॥
 शिशुघ्नी पाशहन्त्री च, काली रुधिर-पायिनी ।
 वसापाना गर्भरक्षा, शवहस्ताऽऽन्त्रमालिका ॥
 ऋक्ष-केशी महा-कुक्षिर्नागास्या प्रेतपृष्ठका ।
 दन्द-शूक-धरा क्रौञ्ची, मृग-श्रृंगा वृषानना ॥
 फाटितास्या धूम्रश्वासा, व्योमपादोर्ध्वदृष्टिका ।
 तापिनी शोषिणी स्थूलघोणोष्ठा कोटरी तथा ॥
 विद्युल्लोला वलाकास्या, मार्जारी कटपूतना ।
 अट्टहास्या च कामाक्षी, मृगाक्षी चेति ता मताः ॥

फल-श्रुति

चतुष्षष्टिस्तु योगिन्यः पूजिता नवरात्रके ।
 दुष्ट-बाधां नाशयन्ति, गर्भ-बालादि-रक्षिकाः ॥
 न डाकिन्यो न शाकिन्यो, न कूष्माण्डा न राक्षसाः ।
 तस्य पीडां प्रकुर्वन्ति, नामान्येतानि यः पठेत् ॥
 बलि-पूजोपहारैश्च, धूप-दीप-समर्पणैः ।
 क्षिप्रं प्रसन्ना योगिन्यो, प्रयच्छेयुर्मनोरथान् ॥
 कृष्णा-चतुर्दशी-रात्रावुपवासी नरोत्तमः ।
 प्रणवादि-चतुर्थ्यन्त-नामभिर्हवनं चरेत् ॥
 प्रत्येकं हवनं चासां, शतमष्टोत्तरं मतम् ।
 स-सर्पिषा गुग्गुलुना, लघु-बदर-मानतः ॥